International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 9 || September 2024 || PP. 154-156

डॉ० मानसिंह दहिया 'आनन्द' के काव्य में प्रयुक्त विभिन्न शब्दालंकार

राजबीर, शोधार्थी,
हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

ड़ॉ अरविन्द कुमार, निर्देशक
हिन्दी विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

प्रस्तावनाः

प्रत्येक साहित्यकार के साहित्य में अनायास ही अलंकारों का प्रयोग होता है क्योंकि भाषा भावों की अनुगामिनी होती है। कवि जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग करता है, उसी प्रकार छन्द–विधान स्वतः ही उसके काव्य में आ जाता है। कोई भी कवि अपने काव्य में बलपूर्वक किसी अलंकार का प्रयोग नहीं करता है। इस विषय में डॉ० जगदीश नारायण त्रिपाठी का कहना है कि–"यद्यपि आधुनिक काल के कवियों ने अलंकारों की योजना जानबूझकर नहीं की है यद्यपि भाषा की शक्ति और सामर्थ्य के रूप में उनकी कविता में अनेकानेक अलंकारों का विधान स्वतः हो गया है। विश्व साहित्य विशेषरूपेण भारतीय काव्य के अध्ययन के कारण अलंकार संस्कार रूप में उनके मन की भाषा में समाविष्ट है। अतः काव्य रचना में आधुनिक कवियों ने उनका प्रर्याप्त प्रयोग किया है और यही कारण है कि आधुनिक कवियों में भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों ही प्रकार की अलंकार योजना दृष्टिगत होती है।"[1]

प्रत्येक कवि ने काव्य में विभिन्न अलंकारों की छटा विद्यमान होती है। इन अलंकारों के कारण ही उसके काव्य का सौंदर्य प्रकट होता है। यह सौंदर्य शब्द, अर्थ तथा शब्द और अर्थ दोनों के माध्यम से प्रकट होता है। प्रस्तुत अध्याय में हम कवि डॉ० मानसिंह दहिया 'आनन्द' द्वारा प्रयुक्त किये गये शब्दालंकारों का विवेचन करेंगे।

शब्दालंकार क्या हैं?

आरम्भिक काव्य–आचार्यों ने अलंकारों के वर्गीकरण की ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि तब अलंकारों की संख्या सीमित ही थी। आचार्य भरत ने अपने नाट्य–शास्त्र में केवल चार ही अलंकार माने हैं–उपमा, रूपक, दीपक और यमक। इसके पश्चात आचार्य भामट ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ काव्यालंकार में कुल 38 अलंकारों का विवेचन किया। आचार्य भामट ने ही सबसे पहले अलंकारों का वर्गीकरण किया। उनके अनुसार अलंकारों के दो भेद होते हैं–शब्दालंकार और अर्थालंकार। उन्होंने अनुप्रास तथा यमक को शब्दालंकार माना है तथा अन्य 36 अलंकारों को अर्थालंकार माना है। अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इन अलंकारों का वर्गीकरण किस आधार पर किया जाये? सभी विद्वानों की इसी मत पर एक राय है कि जहाँ पर शब्दगत संदर्भ विद्यमान हो, वहाँ शब्दालंकार तथा जहाँ अर्थगत सौंदर्य विद्यमान हो, वहाँ अर्थालंकार होता है।

डॉ० संसार चन्द्र शब्दालंकार को परिभाषित करते हुए कहते हैं–"किसी उक्ति में चमत्कार का आधार केवल शब्द हो, वहाँ शब्दालंकार होता है। यहाँ जिस शब्द अथवा जिन शब्दों द्वारा शब्दालंकार होता है, वही अलंकार के मूल कारण समझे जाते हैं। इनके स्थान पर समानार्थक शब्दों का प्रयोग अलंकार को नष्ट कर देता है। इसलिए ऐसे अलंकारों को शब्दालंकार भी कहते हैं।[2]

शब्दालंकार के विषय में आर्थेन्द्र शर्मा कहते हैं कि–"शब्दालंकारों में सब चमत्कार शब्दों पर आश्रित रहता है। यदि उन शब्दों को बदलकर उन्हीं के समानार्थक अन्य शब्द रख दिये जायें, तो अलंकार नहीं रहता; जैसे–कहत धतूरे सौं कनक, गहनो गढ़ो न जाय। यहाँ कनक में 2 लेष शब्दालंकार है। कनक का अर्थ है सोना और धतूरे का वृक्ष। यदि कनक के स्थान पर कांचन या सुवर्ण आदि अन्य कोई समानार्थक शब्द रख दिया जाये, तो यह अलंकार नहीं रहेगा।"[3]

उपरोक्त उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि जहाँ पर केवल शब्द में सौंदर्य विद्यमान हो, वहाँ शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार के एक अन्य विशेषता यह है कि उस शब्द के स्थान पर उसका पर्यावाची रख देने से वह शब्दगत सौंदर्य नष्ट हो जाता है तथा वहाँ शब्दालंकार की सत्ता नष्ट हो जाती है।

शब्दालंकार की विषय–वस्तु

जहाँ तक शब्दालंकार की विषय–वस्तु का प्रश्न है, तो इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि काव्य में शब्दगत सौंदर्य को प्रकट करना ही शब्दालंकार की विषय–वस्तु है। इस संदर्भ ––––– में कहते हैं–"अलंकार वाच्य का उपस्कार करते हैं। शब्दालंकार काव्य के शब्द का तथा अर्थालंकार काव्य के वाच्यार्य का उपस्कार करते हैं।"[4]

काव्य में शब्दालंकारों के प्रयोग द्वारा सौंदर्य उत्पन्न करने की परम्परा संस्कृत साहित्य में अत्यंत विकसित थी। भारवी, दण्डी, माध आदि कवियों के साहित्य में प्रचूर मात्रा में शब्दालंकार का प्रयोग मिलता हैं; यथा–

समायामामाया मासा मारा नायायानारामा।

यानावारा रावानाया मायारामा मारायामा।।[5]

वस्तुतः शब्दांलकारों के माध्यम से केवल शब्दों में ही चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। शब्दों का यह सौंदर्य सहज–ग्राह्य होने के कारण सहृदय के हृदय को अनायास ही आकृष्ट कर लेता है। शब्दगत सौंदर्य या शब्दगत चमत्कार के द्वारा जब कोई कवि अपनी बात कहता है, तो वह शब्दालंकारों को ही माध्यम बनाता है।

शब्दालंकार में शब्द–सौंदर्य

जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि शब्दालंकार में केवल और केवल शब्दगत सौंदर्य का विधान ही किया जाता है। सभी काव्य–आचार्य तथा अलंकार शास्त्री इसी बात पर एकमत हैं कि शब्दालंकार की सत्ता केवल शब्दगत सौंदर्य की नींव पर टिकी है। यदि इन शब्दों के स्थान पर इन शब्दों का पर्यावाची रख दिया जाये, तो यह शब्दगत सौंदर्य विभष्ट हो जाता है। इस संदर्भ में लाला भगवानदीन कहते हैं कि–"जहाँ शब्दों मे चमत्कार पाया जाए, वहाँ शब्दालंकार होता है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि उन शब्दों को बदलकर उनके स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्द रख दिए जाएं, तो वह चमत्कार न रहेगा।[6]

अतः शब्दालंकार में शब्दों के सौंदर्य या शब्दगत चमत्कार पर ही दृष्टि डाली जाती है। इन शब्दों से किन अर्थों की उत्पत्ति होती है, इत्यादि विषयों पर शब्दालंकार में ध्यान नहीं दिया जाता है।

शब्दालंकारों की संख्या

अलंकार शास्त्र के विकास में योगदान देने वाले अनेक आचार्य ने अलंकारों की भिन्न–भिन्न संख्या मानी है। शब्दालंकारों की संख्या पर भी वे एकमत नहीं हैं। अलंकार शास्त्र के प्रारम्भिक काल में अलंकारों को वर्गीकृत नहीं किया गया था। कालान्तर में अलंकार शास्त्र का विकास होता गया तथा अलंकारों की संख्या भी बढ़ती गई। जहाँ तक शब्दालंकारों की संख्या का प्रश्न है, अनेक आचार्य शब्दालंकारों की संख्या पर भी एकमत नहीं हैं। इन आचार्यों ने शब्दालंकारों की भिन्न–भिन्न संख्या मानी है। जो इस प्रकार है–

भामट के अनुसार–भामट ने दो शब्दालंकार माने हैं–अनुप्रास तथा यमक।

दण्डी के अनुसार–दण्डी ने यमक तथा चित्र अलंकार को शब्दालंकार माना है।

उद्भट के अनुसार–उद्भट के अनुसार चार शब्दालंकार होते हैं–अनुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास तथा पुनरूक्तवदाभास।

वामन के अनुसार–आचार्य वामन ने अनुप्रास तथा यमक को शब्दालंकार माना है।

रुद्रट के अनुसार–रुद्रट के अनुसार वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष तथा चित्र नामक पाँच शब्दालंकार होते हैं।

मम्मट के अनुसार–आचार्य मम्मट के अनुसार छह प्रकार के शब्दालंकार होते हैं–वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, चित्र तथा पुनरूक्तवदाभास अलंकार।

रुय्यक के अनुसार–रुय्यक ने शब्दालंकारों की संख्या पाँच मानी है–यमक, चित्र, लाटानुप्रास, छेकानुप्रास, पुनरुक्तवदाभास।

विश्वनाथ के अनुसार–आचार्य विश्वनाथ ने सात प्रकार के शब्दालंकार माने हैं, जो इस प्रकार हैं–अनुप्रास, यमक, वक्रोक्ति, भाषायमक, श्लेष, चित्र तथा पुनरुक्तवदाभास अलंकार।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अलंकार शास्त्र के आचार्य शब्दालंकारों की संख्या पर एकमत नहीं हैं। परन्तु वर्तमान काल में शब्दालंकारों की संख्या केवल पाँच ही मानी जाती है। ये पाँच अलंकार इस प्रकार हैं–अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति तथा पुनरुक्तवदाभास अलंकार। वर्तमान हिन्दी साहित्य जगत में भी इन्हीं पाँच शब्दालंकारों की संख्या को परिगणित करते समय इन्हें पाँच ही माना गया है। वर्तमान काल में भी अधिकतर आचार्य इसी संख्या पर एकमत नजर आते हैं।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जहाँ पर शब्दगत सौंदर्य विद्यमान होता है या जहाँ पर किसी काव्य में शब्दों के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। वह शब्दालंकार हेाता है। जहाँ तक शब्दालंकार की विषय–वस्तु का प्रश्न है, इस अलंकार के माध्यम से केवल शब्दों का सौंदर्य ही बढ़ाया जाता है।

विभिन्न अलंकार शास्त्रियों ने शब्दालंकारों की अलग–अलग संख्याएँ मानी हैं। अलंकार–शास्त्र के प्रारम्भिक दौर में अलंकारों का विभाजन नहीं किया गया था। कालान्तर में अलंकारों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया। इसी श्रेणी में शब्दालंकारों का विभाजन भी किया गया। कुछ

अलंकार शास्त्री केवल दो अलंकारों को शब्दालंकार मानते हैं, तो कुछ अलंकार शास्त्री शब्दालंकार को सात प्रकार के मानते हैं। परन्तु अधिकांश काव्याचार्य केवल पाँच शब्दालंकारों को ही स्वीकार करते हैं। ये पाँच शब्दालंकार इस प्रकार हैं–अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति तथा पुनरुक्तवदाभास अलंकार।

संदर्भ ग्रंथ–सूची–

1- आधुनिक हिन्दी–कविता में अलंकार–विधान, डॉ० जगदीश नारायण त्रिपाठी, अनुसंधान प्रकाशन, आचार्यनगर, कानपुर, 1962, पृ०–2 (भूमिका भाग से)

2- हिन्दी छन्द अलंकारः एक विवेचन–डॉ० संसार चन्द्र, पृ०–136

3- अलंकार–प्रकाश और पिंगल कौमुदी, आर्येन्द्र शर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1940, द्वितीय संस्करण, पृ०–6–7

4- अलंकार धारणाः विकास और विश्लेषण, डॉ० शोभाकांत मिश्र, पृ०–5

5- काव्यादर्श, दण्ड, 3–82

6- अलंकार मंजूषा, लाला भगवादीन, रामसहाय बुक सेलर, विधा प्रचारक बुक डिपो, कचहरी रोड़, गया, बिहार, सम्वत् 1990, सप्तम् संस्करण, पृ०–1

7- काव्य प्रकाश, मम्मट, पृ०–555

8- अलंकार मंजूषा, लाला भगवादीन, रामसहाय बुक सेलर, विधा प्रचारक बुक डिपो, कचहरी रोड़, गया, बिहार, सम्वत् 1990, सप्तम् संस्करण, पृ०–2

9- हिन्दी छंद अलंकारः एक विवेचन, डॉ० संसार चन्द्र, पृ०–137

10- आनन्द आधार, डॉ० मानसिंह दहिया 'आनन्द', पृ०–21

11- शब्द साधना, डॉ० मानसिंह दहिया 'आनन्द', पृ०–91

12- मंजुल प्रभात, डॉ० मानसिंह दहिया 'आनन्द', पृ०–91